जिंदगी कैसी है पहेली हाय

डॉ. विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

29 मई को योगेश गौड़ की पुण्यतिथि होती है, आप में से कई लोग पूछेंगे, कौन योगेश गौड़? तो बताना चाहूंगा, ये वही योगेश गौड़ हैं , जिन्हें दुनिया 'गीतकार योगेश' के नाम से जानती है. गीतकार योगेश का नाम आते ही कुछ अलग रूहानी मिजाज के ऐसे खूबसूरत गीत याद आते हैं जो हमें दूसरी ही दुनिया में ले जाते हैं. गौरतलब है कि हिंदी सिनेमा के सुनहरे दौर में जब बड़े-बड़े शायर और गीतकार अपने गीतों में भारी-भरकम क्लिष्ट शब्दों और अलंकारों का प्रयोग कर रहे थे, तब एक ऐसा गीतकार भी था जो अपने गीतों में बोलचाल की सरल भाषा में जिंदगी का फलसफा, इश्क की रुमानियत और सौंदर्य के आयाम लिख रहा था. वे गीतकार थे 'योगेश'. वही योगेश जिन्होंने ऋषिकेश मुख़र्जी की फ़िल्म 'आनंद' में 'जिंदगी कैसी है पहेली हाय' और 'कहीं दूर जब दिन ढल जाये' और बासु चटर्जी की फ़िल्म 'रजनीगंधा' के लिये 'रजनीगंधा फूल तुम्हारे' जैसे टाइमलेस क्लासिक गीत लिखे.

ऋषिकेश मुखर्जी और बासु चटर्जी जैसे निर्देशकों की फिल्मों के गीतों को अपनी जादुई कलम से अमर बनाने वाले योगेश अपने गीतों में भावनात्मक गहराई और काव्यात्मक सौंदर्य के कारण जाने जाते हैं. 1970 का दशक हिंदी फिल्म संगीत का स्वर्णिम काल माना जाता है और योगेश इस दौर के चर्चित गीतकारों में थे. उन्होंने ऐसे गीत लिखे जो केवल मनोरंजन के लिये नहीं थे, बल्कि मानवीय भावनाओं का खूबसूरत दस्तावेज हैं. उन्होने सिद्ध किया कि फ़िल्मी गीतों में भी साहित्यिक गुणवत्ता और संवेदनशीलता बनाए रखे जा सकते हैं.

किशोरावस्था में ही उन्होंने कविताएँ लिखना शुरू कर दिया था. जब 16 साल के थे तो पिता का निधन हो गया. जिसके बाद नौकरी की तलाश में वे मुंबई पहुँचे, जहाँ उन्होंने फिल्म जगत में गीतकार के रूप में अपनी पहचान बनाने का संघर्ष आरंभ किया. वहां उन्होंने अपने चचेरे भाई फ़िल्म पटकथा लेखक ब्रजेन्द्र गौड़ से मदद मांगी, लेकिन वहां से उन्हें निराशा ही हाथ लगी.

लंबे समय तक संघर्ष करना पड़ा , लेकिन उन्होंने धैर्य नहीं खोया. इस यात्रा में किस्मत से उनके साथ एक ऐसा दोस्त था, जिसने कदम कदम पर उनका साथ निभाया. योगेश जी के उस दोस्त का नाम सत्य प्रकाश तिवारी था और इसी दोस्त की जिद और त्याग ने योगेश गौड़ को महान गीतकार योगेश बना दिया. सत्यप्रकाश हमेशा योगेश जी के सलाहकार, प्रेरक और संकटमोचक रहे. सत्य प्रकाश तिवारी ने योगेश को गीतकार बनाने के लिए खुद चपरासी की नौकरी तक की, लेकिन योगेश को कभी कहीं और काम करने नहीं दिया. ऐसा त्याग करने वाले दोस्त ज़िन्दगी में बहुत मुश्किल से मिलते हैं.

शुरुआत में कड़े संघर्ष के बाद साल 1962 में आई फिल्म 'सखी रॉबिन' से उन्हें पहला ब्रेक मिला, इस फ़िल्म में उनके लिखे मन्नाडे के गाये गीत 'तुम जो आओ तो प्यार आ जाये' को काफी सराहना मिली. धीरे-धीरे संगीतकारों और निर्माताओं का ध्यान उनकी तरफ गया और फिर उनकी मुलाकात महान संगीतकार एसडी बर्मन और सलिल चौधरी से हुई और यहीं से उनकी असल पहचान बनी. ह्रषिकेश मुखर्जी की फ़िल्म 'आनंद' से पहले योगेश को बॉलीवुड में कोई बड़ा ब्रेक नहीं मिला था . फ़िल्म आनंद में ब्रेक भी उन्हें एक दुखद वाकये से मिला. हुआ यूँ कि संगीतकार सलिल चौधरी के स्थाई गीतकार, महाकवि शैलेंद्र का 1966 में निधन हो गया. इसके बाद सलिल चौधरी एक अच्छे गीतकार की तलाश में थे जो उनकी धुनों पर उनके अनुसार गीत लिखे . उनकी ये खोज योगेश पर जाकर समाप्त हुई .

फ़िल्म आनंद की ज़बरदस्त सफलता के बाद सलिल दा-योगेश की जोड़ी ने 'अन्नदाता', 'आनंद महल', 'रजनीगंधा', 'अनोखादान' और 'मीनू' जैसी फ़िल्मों में साथ काम किया. सलिल दा की जटिल संगीत धुनों के लिए गीत लिखना योगेश के लिए आसान नहीं था. मगर योगेश ने ये बखूबी कर दिखाया. उनके गीत 'निस दिन निस दिन मेरा जुल्मी सजन '(अन्नदाता), 'रजनीगंधा फूल तुम्हारे '(रजनी गंधा), 'प्यास लिए मनवा हमार '(मेरे भैया), 'ये दिन क्या आये देखो बसंती बसंती होने लगे मेरे सपने' (छोटी सी बात) जैसे गीतों में योगेश का काव्यात्मक कौशल स्पष्ट दिखाई देता है. योगेश ने फिल्म आनंद के लिए दो गीत लिखे थे, योगेश ने एक इंटरव्यू में बताया कि जब आनंद फिल्म रिलीज़ हुई तो इसमें त्रुटिवश गीतकारों का नाम शामिल ही नहीं किया गया था. ज़ब फ़िल्म रिलीज हुई तो योगेश अपने दोस्तों के साथ फ़िल्म देखने गए, इस उम्मीद के साथ कि फिल्म के अंत में आने वाली क्रेडिट लाइन में उनका भी नाम दिखाई देगा. परंतु फिल्म खत्म हो गई लेकिन योगेश का नाम कहीं नहीं दिखा.

योगेश और उनके साथियों को लगा कि शायद वे जल्दबाजी में देख नहीं पाए होंगे, मगर ऐसा न था, दरअसल नाम था ही नहीं. एक हफ्ते बाद फिल्म डिविजन में योगेश को ह्रषिकेश मुख़र्जी मिल गए. योगेश को देखते ही उन्होंने बोला.. योगेश गुस्सा मत होना, गलती से तुम्हारा और गुलजार का नाम छूट गया था और फिर बाद के प्रिंट्स में दोनों के नाम क्रेडिट लाइन में शामिल कर लिए गए .

योगेश ने हिंदी फिल्मों को कई यादगार गीतों से सजाया. उनके गीतों की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे सरल भाषा में गहरी भावनाएँ व्यक्त करते थे. उनके शब्द आम आदमी के दिल की बात लगते थे. आनंद के अलावा 'रजनीगंधा', 'मिली', 'छोटी सी बात', 'बातों बातों में' और 'मंजिल' समेत कई फिल्मों के लिए उन्होंने यादगार गीत लिखे, उन्होंने जो भी लिखा, पारंपरिक गीतों से अलग लिखा और बड़ा उम्दा लिखा . मगर सच ये भी है कि फ़िल्म जगत में उन्हें वो मुकाम नहीं मिला जिसके वो हकदार थे. उनके लिखे यादगार गीतों में प्रमुख हैं, कहीं दूर जब दिन ढल जाए '(आनंद), 'ज़िंदगी कैसी है पहेली हाय '(आनंद), रजनीगंधा फूल तुम्हारे '(रजनीगंधा), 'न जाने क्यूँ होता है ये ज़िंदगी के साथ' (छोटी सी बात), कई बार यूँ भी देखा है '(रजनीगंधा), 'सुनिए कहिये बातों बातों में प्यार' (बातों बातों में), 'कहाँ तक ये मन को अँधेरे छलेंगे' (बातों बातों में), 'रिमझिम गिरे सावन '(मंज़िल), 'ना बोले तुम ना मैंने कुछ कहा '(बातों बातों में), 'उठे सबके कदम' (बातों बातों में), 'बड़ी सूनी सूनी है ज़िन्दगी ये ज़िन्दगी '(मिली), 'आए तुम याद मुझे, गाने लगी हर धडकन '(मिली), 'मैने कहा फूलों से हंसो तो वो खिलखिला के हंस दिए '(मिली), 'निस दिन निस दिन मेरा ज़ुल्मी सजन '(अन्नदाता), 'जानेमन जानेमन तेरे दो नयन '(छोटी सी बात), 'गुज़र जाए दिन '(अन्नदाता) आदि . फिल्मों के अलावा उन्होंने कई टीवी सीरियल के लिए भी गीत लेखन किया जिनमें 'हसरतें', 'थोड़ा है थोड़े की जरूरत है', 'गुदगुदी', 'चंद्रकांता', 'कुरुक्षेत्र', 'चरित्रहीन' आदि सीरियल प्रमुख हैं.

यूँ तो उनके लिखे सारे ही गीत उत्कृष्ट हैं लेकिन उनका लिखा फ़िल्म आनंद का गीत 'ज़िंदगी कैसी है पहेली' हिंदी सिनेमा का एक कालजयी गीत है, इस गीत के लिए योगेश को व्यापक प्रशंसा मिली, जीवन के दर्शन को सहजता से व्यक्त करने वाला यह गीत आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना अपने समय में था. ये गीत जीवन की नश्वरता और अकेलेपन की भावना को प्रस्तुत करता है. मुकेश की आवाज़ और योगेश के शब्दों ने इसे क्लासिक गीत बना दिया है. इसी प्रकार फ़िल्म 'रजनीगंधा' का गीत 'रजनीगंधा फूल तुम्हारे' प्रेम की कोमल अनुभूतियों से भरा गीत है और योगेश की संवेदनशील लेखनी का उत्कृष्ट उदाहरण है. योगेश की लेखन शैली की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सादगी थी . योगेश उन गीतकारों में थे जिन्होंने शब्दों को भावनाओं की सच्ची अभिव्यक्ति बनाया. वे हमेशा कहते थे— 'जो देखा था, जो जिया था, वही लिखा है. मैंने हमेशा अपने आस-पास के आम लोगों और उनकी भावनाओं के बारे में लिखा'. यही वजह है कि उनके गीतों में क़ोई बनावटीपन नहीं बल्कि ज़िन्दगी की सच्ची महक महसूस होती है . योगेश को उनके उत्कृष्ट गीत लेखन के लिए कई सम्मान प्राप्त हुए. 'रजनीगंधा' के गीत 'कई बार यूँ भी देखा है' के लिए उन्हें फिल्मफेयर पुरस्कार से सम्मानित किया गया. उनको 'यश भारती पुरस्कार' से भी नवाजा गया.

29 मई 2020 को इस महान गीतकार ने इस दुनिया को अलविदा कह दिया. उनके जाने से हिंदी फिल्म जगत ने एक बेहद संवेदनशील गीतकार खो दिया. उनके निधन पर स्वर कोकिला लता मंगेशकर ने दुख जताते हुए कहा था, ' योगेश जी बहुत ही शांत और सुलझे हुए इंसान थे, जिन्होंने दिल को छू लेने वाले कई गीत लिखे'. आज भले ही योगेश जी हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन जब कभी भी खिड़की के बाहर बारिश की बूंदें गिरेंगी या फिर शाम ढलते वक्त दिल की गलियों से यादों का कारवाँ गुजरेगा, उनके लिखे गीत, अवश्य ही हमारी तन्हाइयों के साथी बनेंगे. आज के लिये इतना ही, अगले सप्ताह फिर मुलाक़ात होगी, तब तक योगेश जी के खूबसूरत गीत सुनिये और आनंदित रहिये.

ऐल्फा एक एटीट्यूड का जश्न है : आलिया

बॉलीवुड अभिनेत्री आलिया भट्ट ने कहा है कि यशराज फिल्म्स की आगामी एक्शन फिल्म ऐल्फा की शूटिंग उनके करियर के सबसे यादगार और आनंददायक अनुभवों में से एक रही है. आलिया भट्ट ने का मानना है कि यह फिल्म लिंग की सीमाओं से परे जाकर 'ऐल्फा' सोच और आत्मविश्वासपूर्ण एटीट्यूड का जश्न मनाती है.

यशराज फिल्म्स की इस बड़े बजट की एक्शन फिल्म में आलिया भट्ट और शर्वरी मुख्य भूमिकाओं में नजर आएंगी. फिल्म को भारत की पहली ऐसी बड़े पैमाने की पॉपकॉर्न एक्शन फिल्म माना जा रहा है, जिसके केंद्र में दो महिला सुपरस्टार्स हैं.

आलिया ने कहा, 'ऐल्फा की शूटिंग करते हुए मैंने बहुत अच्छा समय बिताया. यह किसी फिल्म के सेट पर मेरे सबसे मजेदार और यादगार अनुभवों में से एक था. एक्शन, भव्यता और रोमांच से भरी इस दुनिया में कदम रखना बेहद उत्साहजनक था. इस फिल्म ने मुझे उन तरीकों से चुनौती दी, जिनका मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया था और मुझे इसका हर पल पसंद आया. आलिया भट्ट ने कहा कि उन्हें सबसे अधिक खुशी इस बात की है कि फिल्म की कहानी दो महिलाओं के इर्द-गिर्द घूमती है, जो पूरी एक्शन कथा को आगे बढ़ाती हैं. उन्होंने कहा, 'ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है. इसका हिस्सा बनकर मुझे बेहद खुशी हुई. ऐल्फा एक एटीट्यूड का जश्न है और बड़े पर्दे पर मनाए जाने वाला एक शानदार सिनेमाई उत्सव है.

आलिया ने बताया कि फिल्म के निर्माण से जुड़े सभी लोगों का उत्साह इस परियोजना को विशेष बनाता है. उन्होंने कहा कि निर्देशक, कलाकारों, एक्शन टीम और पूरे क्रू के साथ काम करना शानदार अनुभव रहा और वह हर सुबह सेट पर जाने का बेसब्री से इंतजार करती थीं. आदित्य चोपड़ा द्वारा निर्मित और शिव रवैल निर्देशित 'ऐल्फा' तीन जुलाई को दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज होगी.

39 की उम्र में मां बनेंगी सामंथा प्रभु

अभिनेत्री सामंथा प्रभु के लिए यह समय दोहरी खुशियों से भरा हुआ है. एक तरफ उनकी फिल्म 'मां इंटी बंगारम' को दर्शकों का शानदार समर्थन मिल रहा है, वहीं दूसरी ओर उन्होंने अपने जीवन से जुड़ी एक बड़ी खुशखबरी साझा कर अपने प्रशंसकों को उत्साहित कर दिया है. फिल्म की सफलता के उपलक्ष्य में आयोजित थैंक्स मीट कार्यक्रम में सामंथा ने खुलासा किया कि वह मां बनने जा रही हैं. जैसे ही यह घोषणा हुई, वहां मौजूद प्रशंसकों और मेहमानों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उनका स्वागत किया.

अभिनेत्री ने इस खास मौके को अपनी जिंदगी का सबसे सुंदर दौर बताते हुए सभी के प्यार और समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया. सोशल मीडिया पर भी उनके फैंस लगातार बधाइयां और शुभकामनाएं भेज रहे हैं. सामंथा ने कहा कि उनके लिए परिवार हमेशा से बेहद महत्वपूर्ण रहा है और अब वह अपने जीवन के इस नए अध्याय को पूरी तरह जीना चाहती हैं. इसी वजह से उन्होंने कुछ समय के लिए फिल्मों और अन्य प्रोजेक्ट्स से दूरी बनाने का फैसला किया है. अभिनेत्री का मानना है कि यह समय उनके लिए खुद और अपने परिवार पर ध्यान देने का है. फिल्म इंडस्ट्री के कई कलाकारों और उनके करीबी दोस्तों ने भी इस खुशी के मौके पर सामंथा को शुभकामनाएं दी हैं.

फैंस का कहना है कि अभिनेत्री ने अपने करियर में जितनी मजबूती और आत्मविश्वास दिखाया है, उसी तरह वह जीवन के इस नए सफर में भी प्रेरणा बनेंगी. फिल्मी सफलता और निजी जीवन की खुशियों के बीच सामंथा का यह ऐलान उनके प्रशंसकों के लिए किसी बड़े सरप्राइज से कम नहीं है. अब हर कोई उनकी स्वस्थ और खुशहाल मातृत्व यात्रा के लिए शुभकामनाएं दे रहा है. अभिनेत्री का यह नया सफर निश्चित रूप से उनके जीवन के सबसे यादगार अध्यायों में से एक माना जाएगा.

टेलीविजन हलचल

अंगद-वृंदा की जिंदगी में आएगा नया मोड़

क्यों रिश्तों में कटुता बढ़ रही है' के आगामी एपिसोड्स में दर्शकों को जबरदस्त ड्रामा देखने को मिलने वाला है. परिवार के भीतर बढ़ती साजिशों और रिश्तों में आती दरारों के बीच एक सीसीटीवी फुटेज पूरी कहानी की दिशा बदल सकती है. सबसे ज्यादा परेशानी में विक्रांत नजर आने वाला है, जिसकी कई चालें अब उजागर होने के कगार पर हैं. शो में देव और विक्रांत दोनों ही परिवार के लिए नई परेशानियां खड़ी कर रहे हैं. देव जहां मेहनत किए बिना अमीर बनने का सपना देख रहा है, वहीं पार्थ के उकसावे में आकर वह परिवार की संपत्ति और विश्वास को नुकसान पहुंचाने की योजना बना रहा है. दूसरी तरफ विक्रांत अपनी निजी महत्वाकांक्षाओं के चलते लगातार रिश्तों को तोड़ने में लगा हुआ है. विक्रांत ने पहले ही अंगद और वृंदा के बीच गलतफहमियां पैदा कर दी हैं. उसके झूठ के कारण अंगद अपने होने वाले बच्चे को लेकर संदेह में पड़ गया है, जिससे दोनों के रिश्ते पर गहरा असर पड़ा है. हालांकि अब कहानी में नया मोड़ तब आता है जब विक्रांत को पता चलता है कि देव परिवार के खातों से पैसे चुरा रहा है. वह इस जानकारी का इस्तेमाल करके खुद को परिवार का भरोसेमंद सदस्य साबित करना चाहता है. लेकिन हेमंत का एक खुलासा उसकी पूरी योजना पर पानी फेर सकता है. हेमंत बताता है कि उसने अपने केबिन में सीसीटीवी कैमरा लगवाया था, जिसमें कई अहम घटनाएं रिकॉर्ड हुई हो सकती हैं. यह सुनते ही विक्रांत घबरा जाता है, क्योंकि उसे एहसास हो जाता है कि अगर फुटेज सामने आई तो उसके झूठ, साजिश और असली इरादे सबके सामने आ सकते हैं. अब दर्शकों के मन में सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या सीसीटीवी फुटेज परिवार में नया तूफान लाएगी या फिर अंगद और वृंदा के रिश्ते को बचाने का काम करेगी? वहीं यह भी देखना दिलचस्प होगा कि विक्रांत अपने बचाव के लिए कौन-सी नई चाल चलता है.

अभीरा की एक बात से बदलेगी अरमान की जिंदगी

ये रिश्ता क्या कहलाता है' के आगामी एपिसोड्स में दर्शकों को भावनाओं, प्यार और सस्पेंस से भरपूर कहानी देखने को मिलेगी. अरमान अपनी सर्जरी को लेकर गहरे तनाव में है. उसकी याददाश्त लगातार प्रभावित हो रही है और उसे इस बात का डर सता रहा है कि ऑपरेशन के बाद उसकी जिंदगी में क्या बदलाव आएंगे. यही कारण है कि वह अपने परिवार की सुरक्षा और भविष्य को लेकर पहले से ही तैयारी करने में जुटा हुआ है. अरमान ने हाल ही में कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां पूरी की हैं. उसने ऋषभ को जेल पहुंचाया, मुक्ति और मायरा के लिए खुशियों भरे पल तैयार किए और अभीरा के करियर को सुरक्षित करने के लिए लंबे समय तक के क्लाइंट्स की व्यवस्था की. इन सबके बाद वह अपने परिवार के साथ जश्न मनाता है और हर पल को दिल से जीने की कोशिश करता है, क्योंकि उसे नहीं पता कि भविष्य में उसे ऐसा मौका दोबारा मिलेगा या नहीं. खुशी और मस्ती के बीच एक बेहद भावुक और रोमांटिक पल भी आता है. अरमान जब अभीरा को खूबसूरत कहता है, तो अभीरा प्यार से उसे याद दिलाती है कि वे अभी तक शादीशुदा नहीं हैं. इस पर अरमान उससे हर जन्म में साथ निभाने का वादा करता है, जबकि अभीरा सातों जन्मों तक उसका साथ देने की कसम खाती है. यह पल दोनों के रिश्ते को और मजबूत बनाता है. हालांकि अंदर ही अंदर अरमान सर्जरी के परिणामों को लेकर डरा हुआ है. वह खुद को बोझ महसूस करने लगता है और घर छोड़कर जाने का फैसला करता है.

अक्षय कुमार का सिंगिंग अवतार फिर छाया

वेलकम टू द जंगल' का पार्टी सॉन्ग रिलीज

कॉमेडी और मनोरंजन से भरपूर 'वेलकम' फ्रेंचाइज़ी एक बार फिर दर्शकों को हंसाने और झूमने के लिए तैयार है. फिल्म वेलकम टू द जंगल का नया गाना तेरा पैसा मेरा पैसा रिलीज़ कर दिया गया है, जिसने आते ही दर्शकों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है. यह गाना सिर्फ एक पार्टी ट्रैक नहीं, बल्कि फिल्म के रंगीन और मनोरंजक माहौल की झलक भी पेश करता है. गाने की सबसे बड़ी खासियत अक्षय कुमार की आवाज़ है. बॉलीवुड में अपने एक्शन, कॉमेडी और शानदार स्क्रीन प्रेजेंस के लिए मशहूर अक्षय इस बार सिंगर के रूप में भी दर्शकों को एंटरटेन करते नजर आ रहे हैं. उनके साथ फरहाद भीवंडीवाला, रुबाई और संगीतकार विक्रम मोंट्रोस ने भी अपनी आवाज़ दी है. गाने की धुन और बोल ऐसे हैं जो पहली बार सुनने पर ही लोगों को थिरकने पर मजबूर कर देते हैं.

हाल ही में मुंबई में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में इस गाने को लॉन्च किया गया. इस अवसर पर निर्देशक अहमद खान, अक्षय कुमार, जैकी श्रॉफ, परेश रावल, सुनील शेट्टी, फरीदा जलाल, जैकलीन फर्नांडिस, राजपाल यादव, किकू शारदा और निर्माता फिरोज़ ए. नाडियाडवाला समेत फिल्म की पूरी टीम मौजूद रही. कार्यक्रम के दौरान कलाकारों और मेहमानों ने गाने की धुन पर जमकर मस्ती की. तेरा पैसा मेरा पैसा में फिल्म की बड़ी स्टारकास्ट एक साथ नजर आती है. रंग-बिरंगे सेट, शानदार कॉस्ट्यूम्स, मजेदार एक्सप्रेशंस और हल्की-फुल्की नोकझोंक गाने को और भी आकर्षक बनाते हैं. यही तत्व 'वेलकम' फ्रेंचाइज़ी की पहचान रहे हैं और इस नए गाने में भी उन्हें बखूबी शामिल किया गया है.

गाने की रिलीज़ के बाद इसका कराओके वर्ज़न मराठी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी, बंगाली और तमिल भाषाओं में भी पेश किया गया, जिससे विभिन्न क्षेत्रों के दर्शक इससे जुड़ सकें. संगीतकार विक्रम मोंट्रोस का कहना है कि उनका उद्देश्य ऐसा गीत बनाना था जिसे लोग सुनते ही एंजॉय करें और पार्टी के दौरान बार-बार बजाना चाहें.

चंडीगढ़ शूटिंग संग स्थानीय स्वाद में डूबीं कशिका

अभिनेत्री कशिका कपूर इन दिनों अपनी आगामी फिल्म की शूटिंग के सिलसिले में चंडीगढ़ में हैं। कशिका कपूर सोशल मीडिया के माध्यम से अपने प्रशंसकों को शूटिंग से जुड़ी झलकियां और शहर में बिताए जा रहे खास पलों की जानकारी दे रही हैं। कशिका कपूर ने हाल ही में सोशल मीडिया पर कई तस्वीरें साझा कीं, जिनमें उनके व्यस्त शूटिंग शेड्यूल के साथ-साथ चंडीगढ़ की खान-पान संस्कृति के प्रति उनका उत्साह भी दिखाई दिया.

तस्वीरों में वह सेट पर कैजुअल और स्टाइलिश अंदाज में नजर आ रही हैं तथा शूटिंग के बीच मिले अवकाश के क्षणों का आनंद लेती दिख रही हैं. कशिका कपूर ने चंडीगढ़ के विभिन्न स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लेते हुए भी तस्वीरें साझा की हैं. उन्होंने शहर के मशहूर स्ट्रीट फूड और पारंपरिक पंजाबी व्यंजनों के प्रति अपनी पसंद जाहिर की.

नचिकेत देते हैं रचनात्मक आजादी : रचित

अभिनेता रचित सिंह ने अपनी आगामी फिल्म बेबी डू डाई डू के निर्देशक नचिकेत सामंत की कार्यशैली की सराहना करते हुए कहा है कि उनका शांत और सहज स्वभाव कलाकारों को अपने किरदार को स्वाभाविक ढंग से निभाने का अवसर देता है.

रचित सिंह ने बताया कि नचिकेत सामंत का रिलैक्स्ड वर्किंग स्टाइल सेट पर सकारात्मक माहौल बनाता है और कलाकारों को अपने किरदार में पूरी तरह डूबने में मदद करता है. रचित ने कहा, 'नाची के साथ काम करना काफी रिलैक्स्ड था क्योंकि वह बहुत शांत और सहज हैं. सेट पर चाहे कुछ भी हो जाए, वह घबराते नहीं हैं. उनकी यही ऊर्जा कलाकारों को भी संतुलित और उस पल में मौजूद रहने में मदद करती है. वह ज्यादा बोलते नहीं हैं, लेकिन कुछ शब्दों और छोटे-छोटे सुझावों के जरिए दृश्य की गहराई और किरदार की समझ बढ़ा देते हैं.

उन्होंने कहा कि नचिकेत सामंत अत्यधिक तैयारी से अधिक दृश्य की स्वाभाविकता पर विश्वास करते हैं. निर्देशक कलाकारों को सुनने, निर्देशन को आत्मसात करने और दृश्य को प्राकृतिक ढंग से विकसित होने देने के पक्षधर हैं.

फिल्म में रचित सिंह 'सिद्धू' नामक एक संगीतकार और संगीत शिक्षक की भूमिका निभा रहे हैं, जो अपने प्रियजनों के लिए हमेशा खड़ा रहने वाला संवेदनशील और नेकदिल व्यक्ति है. यह किरदार उनके पूर्व के गंभीर और गहरे किरदारों से बिल्कुल अलग बताया जा रहा है.

सोनाक्षी-जहीर ने मनाई दूसरी एनिवर्सरी

बॉलीवुड अभिनेत्री सोनाक्षी सिन्हा और अभिनेता जहीर इकबाल ने अपनी दूसरी शादी की सालगिरह को प्यार, खुशियों और यादगार पलों के साथ सेलिब्रेट किया. दोनों की प्रेम कहानी लंबे समय से फैंस के बीच चर्चा का विषय रही है. करीब सात साल तक एक-दूसरे को डेट करने के बाद 23 जून 2024 को दोनों ने शादी कर अपने रिश्ते को नई पहचान दी थी. अब शादी के दो साल पूरे होने पर कपल ने इस खास दिन को बेहद रोमांटिक अंदाज में मनाया.

सालगिरह के अवसर पर साझा की गई तस्वीरों में दोनों एक-दूसरे के साथ बेहद खुश नजर आए. तस्वीरों और वीडियोज में कपल के बीच की केमिस्ट्री साफ दिखाई दे रही थी. सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर करते ही फैंस और बॉलीवुड सितारों की ओर से शुभकामनाओं की बाढ़ आ गई. लोगों ने दोनों की जोड़ी को इंडस्ट्री की सबसे प्यारी जोड़ियों में से एक बताया. सोनाक्षी और जहीर हमेशा से अपने रिश्ते को लेकर खुले रहे हैं. दोनों ने कई मौकों पर स्वीकार किया है कि दोस्ती से शुरू हुआ उनका रिश्ता समय के साथ और मजबूत होता गया. यही भरोसा और समझदारी आज उनके वैवाहिक जीवन की सबसे बड़ी ताकत बन चुकी है.

वर्क फ्रंट की बात करें तो सोनाक्षी सिन्हा लगातार फिल्मों और ओटीटी प्रोजेक्ट्स में सक्रिय हैं, जबकि जहीर इकबाल भी अपने अभिनय करियर को नई दिशा देने में जुटे हुए हैं. व्यस्त शेड्यूल के बावजूद दोनों एक-दूसरे के लिए समय निकालना नहीं भूलते, जिसकी झलक अक्सर सोशल मीडिया पर देखने को मिलती है. दूसरी शादी की सालगिरह पर कपल ने यह साबित कर दिया कि सच्चा प्यार समय के साथ और भी खूबसूरत होता जाता है. फैंस अब उनके आने वाले वर्षों के लिए भी ढेर सारी खुशियों और सफलता की कामना कर रहे हैं.